वाक्यांते ब्रह्मवादिनः। हिरण्यस्य सुवर्णस्य कोटिभी रत्नराशिभिः॥२२॥ 21ᵃ. शुनःशेपं नरेश्वरः।. Pro dist. 22. अवरीषस्तु राजर्षी रथमारोप्य सत्वरः। शुनःशेपं महातेजा जगामाशु महायशाः॥२४॥

Cap. LXII.

Dist. 1. शुनःशेपं नरश्रेष्ठं गृहीत्वा तु महायशाः। व्यश्रमत्पुष्करे राजा म°. 2ᵃ. तस्य विश्रममाणस्य शुनःशेपो महायशाः।. 3ᵃ. परमातुलमातुरः।. 8ᵇ. सांत्व°. 13ᵃ. मुनेस्तद्वचनं. 14ᵃ. ऽन्यसुतं. 14ᵇ. श्वमांसमिव. 17ᵃ. श्वमांसभोजिनः. 17ᵇ. पूर्णं. 19ᵇ. वैष्णवं रूप°. 22ᵇ. निर्वर्तयस्व राजेंद्र दीक्षां च समुपाहर॥ 25ᵃ. वाग्भिरभिर°. 25ᵇ. मुनिपुंगवः।. 26ᵃ. ततः प्रीतः. 27ᵃ. यज्ञस्य च समाप्तवान्. Dist. 28. भूयस्तेपे महातपाः। पुष्करेषु नरश्रेष्ठ दश वर्षशतानि च॥

Libri duo priores et 63 capita libri tertii anno 1806 a Carey et Marshman quatuor voluminibus editi sunt. Ea editio satis rara nuper in librariam nostram pervenit. Duo libri a Schlegel. publici juris facti sunt. Denique Gorresio recensionem Gaudanam Parisiis una cum versione Italica edidit. (Mill 139–141.)

42.

Lit. Devan. Charta Ind. Foll. 512. Long. 13. Lat. 5. Linn. variant.

Agnipuráṇam, ab Agni deo cum Vasishṭha, denique a Súta cum anachoretis communicatum. Incipit:

लक्ष्मीं सरस्वतीं गौरी गणेशं स्कन्दमीश्वरं।
ब्राह्मणं वह्निमिन्द्रादीन् वासुदेवं नमाम्यहं॥
नैमिषहरिमासीना (l. नैमिषारण्य आ°) ऋषयः शौनकादयः।
तीर्थयात्राप्रसंगेन स्वागतं सूतमब्रुवन्॥ ऋषय ऊचुः॥
सूत त्वं पूजितो स्माभिः सारात्सारं वदस्व नः।
येन विज्ञातमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रजायते॥

De argumento hujus Puráṇae vide Wilson in J. A. S. B. I, 81. et in Vishṇupuráṇae praef. p. xxxvi. In codice nostro quum neque capita numerata, neque versus separati sint, plura dicere vanum esset, pauca si indicavero lecturis acceptum fore puto. Post Vishnuis ἐπιφανειῶν descriptionem (cap. 1–4), septem capitibus, quae singulorum Rámáyaṇae librorum nomina gerunt, ejus carminis epitome datur. Sequitur Harivanṣae (c.12, 13) et Mahábháratae (c. 14–16) epitome. Quae capita de initiatione (díkshá, fol. 128ᵃ–147ᵇ) agunt, his verbis incipiunt: वक्ष्यामि भोगमोक्षार्थं दीक्षां पापक्षयंकरीं। मलमायादिपाशानां विश्लेषः क्रियते यया॥ ज्ञानं च जन्यते शिष्ये सा दीक्षा भुक्तिमुक्तिदा।. fol. 181ᵇ. माहात्म्यं सर्वतीर्थानां. fol. 186ᵃ. गयामाहात्म्यं. fol. 203ᵃ. ज्योतिःशास्त्रं. fol. 210ᵃ–237ᵇ. युद्धजयार्णवः।. Quam seri originis liber sit, vel ex his verbis, quamvis depravatis, dignoscitur. Fol. 232ᵇ. नानामंत्रान् प्रवक्ष्यामि षोडान्यासपुरसरः। न्यासःस्त्रिधातु षोढा स्युः शाक्तशांभवयामला।. De formulis mysticis agitur quae a sectis Ṣáktika, Ṣivaitika, Tántrika adhibentur. fol. 238ᵇ. मन्वंतराणि. fol. 239ᵇ–309ᵃ. धर्मशास्त्रं. fol. 314ᵇ–351ᵇ. राजधर्मः. fol. 356ᵃ–360ᵃ. धनुर्वेदः. fol. 360ᵃ–369ᵃ. व्यवहारः. Haec pars paucis mutatis et additis ex Yájnavalkyae legum codice desumta est. fol. 369ᵃ. Ṛigvidhánam, i. e. Rigvedi hymni sive disticha ad varias superstitiones adhibenda. Haec pars e Ṛigvidhána libello, qui et ipse serae originis indicia prae se fert, excerpta est, multique versus ad literam cum illo consentiunt. fol. 378ᵃ. आथर्वणविधानं. fol. 379ᵃ. श्रीसूक्तं. fol. 388ᵃ. Puránárum recensio. fol. 398ᵃ–412ᵇ. आयुर्वेदः. Incipit: आयुर्वेदं प्रवक्ष्यामि सुश्रुताय यमब्रवीत्। देवो धन्वंतरिः सारं मृतसंजीवनीकरं॥ fol. 414ᵇ. अश्वादिलक्षणं वक्ष्ये शालिहोत्रो यथावदत्।. fol. 418ᵃ. गजशांतिः. fol. 459ᵇ. छंदःसारः पिंगलोक्तः. fol. 465ᵇ–484ᵃ. अलंकारः. Fol. 485ᵃ. व्याकरणं. Incipit: वक्ष्ये व्याकरणंसारं सिद्धशब्दस्वरूपकं। कात्यायनं विरोधाय बालानां बोधनाय च॥ Ordo hic observatur: Sandhi, declinatio, de casuum usu, de suffixis taddhita. Sequitur glossarium et synonymicum et homonymicum.

Codex anno 1821 duabus manibus ita exaratus est, ut folia quaedam alteri, alteri alia debeantur. Inde a medio codice lacunae multae reperiuntur. (Wilson 129.)

43.

Lit. Devan. Charta Ind. Foll. 209. Long. 13. Lat. 5. Linn. 8–10.

Kúrmapuráṇa, a Vishnue, testudinis formam gerente, revelatum. (B.) Incipit: नमस्कृत्याप्रमेयाय विष्णवे कूर्मरूपिणे। पुराणं संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं विश्वयोनिना॥ सत्रांते सूतमनघं नैमिषेण महर्षयः। (l. naimisheyá maharshayaḥ) पुराणसंहितां पुण्यां पप्रच्छ (paprachú A.) रोमहर्षणं॥ त्वया सूत महाबुद्धे भगवान् ब्रह्मवित्तमः। इतिहासपुराणार्थं व्यासः सम्यगुपासितः॥ तस्य ते सर्वरोमाणि वचसा हर्षितानि यत्। द्वैपायनस्तु भगवान् ततो वै रोमहर्षणः॥ भवंतमेव भगवान् व्याजहार स्वयं प्रभुः। मुनीनां संहितां वक्तुं व्यासः पौराणिकीं पुरा॥ त्वं हि स्वायंभुवे यज्ञे सत्याहे (sutyáhe) वितते सति। संभूतः संहितां वक्तुं स्वांशेन पुरुषोत्तमः॥ तस्माद्भवंतं पृच्छामः पुराणं कौर्ममुत्तमं। वक्तुमर्हसि चास्माकं पुराणार्थविशारदः॥ मुनीनां वचनं श्रुत्वा सूतः पौराणिकोत्तमः। प्रणम्य मनसा प्राह गुरुं सत्यवतीसुतं॥ नमस्कृत्य जगद्योनिं कूर्मरूपधरं हरिं। वक्ष्ये पौराणिकीं दिव्यां कथां पापप्रनाशिनीं॥ यां श्रुत्वा पापकर्मापि गच्छेत परमां गतिं। न नास्तिके कथा पुण्यामिमां ब्रूयात्कदा चन॥ श्रद्दधानाय शांताय धार्मिकाय द्विजातये। इमां कथामनुब्रूयात्साक्षान्नारायणेरितां॥ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वंतराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणं॥